LIC
भारतीय जीवन बीमा निगम
LIFE INSURANCE CORPORATION OF INDIA

"सूफी प्रेम-काव्य परम्परा और जायसी"

भक्तिकालीन हिन्दी साहित्य की निर्गुणवादी प्रेमाश्रयी काव्य परम्परा में मलिक मुहम्मद जायसी का स्थान सर्वोपरि है। हिन्दी साहित्य में सूफी प्रेम-काव्य परम्परा का आरम्भ मुल्ला दाऊद की रचना 'चन्दायन' से माना जाता है। जायसी ने 'पद्मावत' में कुछ अन्य कथाओं का उल्लेख किया है, जैसे — सपनावति (स्वप्नावती), मुगुधावति (मुग्धावती), मिरिगावति (मृगावती), खण्डावति, मधुमालती तथा प्रेमावति। इनमें से केवल मृगावती और मधुमालती ही उपलब्ध हैं, शेष कथाएँ अभी तक अप्राप्त हैं। हिन्दी के उपलब्ध सूफी प्रेम-काव्यों में कुतुबन की 'मृगावती' सबसे प्राचीन रचना है। इसमें गणपति देव के राजकुमार और कंचनपुर के राजा रूपमुरारि की पुत्री मृगावती के प्रेम की कथा को बड़े रोचक ढंग से कवि ने प्रस्तुत किया है। 'मृगावती' सन् 1503 ई० की रचना मानी जाती है। इसके साथ ही नारायणदास तथा रतनरंग कृत 'छिताईवार्ता' मिलती है, जिसमें अलाउद्दीन और देवगिरि के राजा रामदेव की लड़ाई छिताई का आधार बनाकर काव्य रचना की गई है। इसके पश्चात् सूफी प्रेम-काव्यों में सबसे प्रसिद्ध जायसी कृत 'पदमावत' काव्य आता है। 'पदमावत' का रचनाकाल 1520 ई० है। 'पदमावत' में सूफी मत की व्यापक चर्चा के साथ-साथ भारतीय और फारसी संस्कृति का समाहार हुआ है। इसमें जायसी ने भारतीय लोक-कथा को आधार बनाकर ऐतिहासिकता को स्थापित करने का प्रयास किया है। जायसी का 'पदमावत' अन्य सभी कवियों की रचनाओं से भिन्न है।

भारतीय जीवन बीमा निगम
LIFE INSURANCE CORPORATION OF INDIA

'पद्मावत' के अनन्तर मंझन कृत 'मधुमालती' काव्य मिलता है, जिसमें कनेसर के राजा सूरजभज के पुत्र मनोहर तथा महारस नगर की राजकुमारी मधुमालती के प्रेम-कथा का वर्णन है। इसके उपरान्त उस्मान कृत 'चित्रावली' काव्य आता है जिसमें पाल के राजा धरनीधर के पुत्र सुजान और रूपनगर की राजकुमारी चित्रावली के प्रेम का वर्णन कवि ने विस्तार से की है। 'चित्रावली' के बाद जानकवि द्वारा रचित २९ सूफी प्रेम-काव्य मिलते हैं, जिनमें— रत्नावली, लैला-मजनू, रतन-मंजरी, नल-दमयन्ती, पहुप-बरिषा, कमलवती, छविसागर, कामलता, कलावती, हिता, रूपमंजरी, मोहिनी, चन्द्रसेन, सीलनिधान, कामरानी, पीतमदास, कला-कलन्दर की कथा, देवलदेवी, कनकावती, कौतूहल, खुमरराह तथा बुद्धिसागर है। तदुपरान्त शेखनबी कृत 'ज्ञानद्वीप' नामक प्रेम-काव्य मिलता है, जिसमें रानी देवजानी तथा राजा ज्ञानद्वीप के प्रेम-सम्बन्ध का वर्णन है। इसके बाद कवि नूरमुहम्मद कृत 'इन्द्रावती' और 'अनुराग बाँसुरी' नामक प्रेम-काव्य मिलते हैं। 'इन्द्रावती' में कालिंजर के राजा भूपति के पुत्र राजकुँअर तथा आगमपुर नगर के राजा जगपति की कन्या इन्द्रावती के प्रेम का वर्णन है। 'अनुराग बाँसुरी' में मूरतिपुर नगर के राजा जीव के पुत्र अन्तःकरण तथा स्नेहनगर के राजा दर्शनराय की पुत्री सर्वमंगला के प्रेम की गाथा वर्णित है।

सूफी कवियों के उक्त सभी प्रेम-काव्य प्रबन्ध-काव्य हैं तथा इन सभी में किसी-न-किसी राजकुमार और राजकुमारी के प्रेम का वर्णन मिलता है। इन सभी सूफी प्रेम-काव्यों के कथानक प्रायः काल्पनिक घटनाओं पर आधारित हैं, परन्तु कहीं-कहीं उसे ऐतिहासिक घटनाओं से जोड़ दिया गया है इस तरह सभी सूफी प्रेम-काव्य एक कथा-रूपक (Allegory) के ढंग पर निर्मित

हुए हैं। जायसी के परवर्ती प्रेम-काव्य पूर्णतया 'पद्मावत' से प्रभावित जान पड़ते हैं। उसमान कृत 'चित्रावली' तो 'पद्मावत' की छाया जान पड़ता है। इसी तरह अन्य सूफी कवियों ने भी 'पद्मावत' को ही अपना आदर्श बनाया है और उसी के अनुसार घटनाओं एवं सूफी सिद्धांतों की योजना की है।

जायसी का 'पद्मावत' अनुपम एवं अद्वितीय प्रेम-काव्य है, उसमें सरल एवं आलंकारिक भाषा के अन्तर्गत इतिवृत्तात्मकता के साथ-साथ रसात्मकता एवं कौतूहल की जैसी सृष्टि कवि द्वारा की गई है, वैसी अन्यत्र कहीं किसी सूफी काव्य में दृष्टिगोचर नहीं होती। इसके साथ ही जायसी ने नागमती के विरह का जैसा मनोवैज्ञानिक एवं मर्मस्पर्शी वर्णन किया है, वैसा अन्य दूसरा सूफी कवि नहीं कर सका है। इतना ही नहीं जायसी को लौकिक प्रेम के द्वारा अलौकिक प्रेम के वर्णन में भी अद्भुत सफलता प्राप्त हुई है। इसलिए जायसी कृत 'पद्मावत' समस्त सूफी प्रेम-काव्यों में सर्वश्रेष्ठ है। उसमें प्रेम-काव्य का सुन्दर एवं सजीव आदर्श प्रस्तुत किया गया है तथा भारतीय जीवन-पद्धति के साथ-साथ सूफी सिद्धान्तों का अद्भुत सम्मिश्रण किया गया है। जायसी की अन्य विशेषताओं में यह उनकी अपनी विशेषता है कि जहाँ अन्य सूफी कवि प्रेम, करुणा, भक्ति, एवं अन्य कोमल भावनाओं की अभिव्यक्ति में लगे दिखाई पड़ते हैं, वहाँ जायसी लोक-भावना से जुड़कर युद्ध, उत्साह, क्रोध, खीझ आदि का वर्णन किया है। सूफी काव्य-परम्परा में 'पद्मावत' एक सर्वोत्तम प्रबन्ध-काव्य है। इसकी कथा-योजना, पात्र-योजना, सम्वाद-वर्णन, प्रतीकात्मकता एवं रहस्य-भावना इत्यादि को देखा जाय तो यह प्रेमाश्रयी शाखा की सर्वोत्कृष्ट कृति है।

भारतीय जीवन बीमा निगम
LIFE INSURANCE CORPORATION OF INDIA

अतएव निष्कर्ष रूपेण कहा जा सकता है कि जायसी अपनी उर्वर कल्पना, प्रखर प्रतिभा एवं उत्कृष्ट कवित्व-शक्ति के कारण हिन्दी के सम्पूर्ण सूफी कवियों में सर्वोच्च स्थान रखते हैं तथा हिन्दी की सूफी प्रेम-काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि हैं। जायसी अपनी काव्य-क्षमता, कल्पनाशीलता, विचार-चिन्तन और अभिव्यंजना शक्ति के कारण सूफी काव्य-परम्परा के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं।